



॥ श्री राधा चालीसा ॥
॥ श्री राधे राधे ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री राधा चालीसा ॥

॥ दोहा ॥

श्री राधे वृषभानुजा, भक्तनि प्राण अधार।
वृंदावन विपिन विहारिणी, करहु कृपा अपार॥
जय जय श्री राधे, सकल सुख की खान।
दीनन पर करुणा करो, हरहु सकल अज्ञान॥

॥ चौपाई ॥

जय वृषभानु कुमारी राधा।
मंगलमयी शुभ गुण अगाधा॥
करुणामयी कृपा की सागर।
भक्त जनों की हो हितकार॥

ब्रज की शोभा तुमसे न्यारी।
श्याम प्रिया अति सुखकारी॥
गोपिन संग रास रचाया।
प्रेम सुधा सबको बरसाया॥

श्याम बिना नहिं चैन तुम्हारा।
तुम बिन श्याम अधूरा सारा॥
भक्ति शक्ति की तुम हो दाता।
भवसागर से पार लगाता॥

जो जन नित तुमको ध्यावे।
मनवांछित फल सहजहि पावे॥
दीन दुखी पर दया दिखाओ।
अपने चरणों में बसाओ॥
वृंदावन की तुम हो रानी।
जग में महिमा वेद बखानी॥

रास विलास की तुम अधिकारी।
भक्तों की संकट हरणिहारी॥
नाम तुम्हारा अमृत धारा।

हर ले जन्म-जन्म का कारा॥
प्रेम भक्ति का दीप जलाओ।
अपने भक्त निकट बुलाओ॥
जो नर नारी शरण तुम्हारी।
होय कृपा तो मिटे दुःख भारी॥

अष्ट सिद्धि नव निधि की दाता।
भक्तों की तुम भाग्य विधाता॥
श्याम संग नित विहरन वाली।
मधुर प्रेम रस बरसाने वाली॥

राधा नाम बड़ा सुखकारी।
संकट हरता मंगलकारी॥
भक्ति भाव जो मन में लावे।
राधा कृपा सहज ही पावे॥

तन मन धन सब अर्पण करिए।
राधा चरणों में जीवन धरिए॥
राधे राधे जो नर गावै।
सकल मनोरथ सिद्धि पावै॥

॥ दोहा ॥

राधा चालीसा जो पढ़े, श्रद्धा सहित मन लाय।
राधा रानी कृपा करें, हरि भक्ति फल पाय॥
जय जय श्री राधे, वृंदावन विहार।
भक्त जनों पर कृपा करो, हरो सकल संताप॥